Research Paper

Volume : 5 | Issue : 1 | JANUARY 2016 • ISSN No 2277 - 8179

dkfynkl d lkfgR; e ukjh ik=k dh uerk] d#.kk vkj eerk

Sanskrit

KEYWORDS :

Mahavir Singh

Research, Hindi Department, Baba Mastnath University (B.M.U.), Rohtak (Haryana) -124001

uerk

सभी के साथ मृदु व्यवहार नम्रता का प्रथम लक्षण है, विनम्र स्वभाव युक्त व्यक्ति ही विश्व में हर सम्भव कार्य कर सकता है। नम्रता मनुष्य का प्रथम गुण है।

'मालविकाग्निमित्र' नाटक के पाँचवें अङ्क में रानीधारिणी में नम्रता का गुण प्रकाशित हुआ है। रानीधारिणी ज्येष्ठा होते हुए भी अपनी प्रतिज्ञा के पालन हेतु इरावती से प्रार्थना करते हुए उसे सत्य से भ्रष्ट न करने को कहती है।

'देवी (समीप जाकर) अशोक वृक्ष की इच्छापूर्ति के कार्य में नियुक्त करते समय, मैंने मालविका से जो प्रतिज्ञा की थी, उसे और उसकी सत्कुलीनता को सूचित करते हुए इरावती से मेरी ओर से प्रार्थना करना कि वह मुझे सत्य से भ्रष्ट न करें'।[1] यह कथन रानी धारिणी की नम्रता का परिचायक है। रानी धारिणी अत्यन्त नम्रता से मालविका को राजा को सौपकर कहती है कि मेरे स्वामिन् प्रिय समाचार सुनाने के अनुरूप इस उपहार को स्वीकार करो।[2] इस प्रकार रानीधारिणी के मन में मालविका के प्रति ईर्ष्या नहीं थी अपितु उसके ऊँचे कुल के विषय में जानकर वह अत्यन्त नम्रता से राजा व मालविका का मिलन करवा देती है।

'अभिज्ञानशाकुन्तल' के प्रथम अङ्क में अनसूया और प्रियंवदा अत्यन्त नम्रता से राजा का अतिथि सत्कार करती हैं। अनसूया अर्घ्य लाने के लिए सखी को कहती है तो प्रियवंदा राजा को सप्तवर्ण वेदी पर बैठकर विश्राम करने के लिए कहती है।

सखी शकुन्तले। कुटी से फलयुक्त अर्घ्य ले आ। यह (घड़े का जल) पैर धोने के लिए लाया जायेगा।[3]

प्रियवंदा – तो घनी छाया के कारण शीतल, इस सप्तवर्ण वेदी पर बैठकर आप अपनी थकान दूर कर ले।[4]

इस प्रकार कलिदास ने भी स्त्रीपात्रों के माध्यम से नम्रता का गुण अत्यन्त स्वाभा. विक ढंग से प्रस्तुत किया है।

d#.kk

किसी व्यक्ति को दुःखी देखकर या वियोग से जो मन में भाव उत्पन्न होता है वह करुणा कहलाती है। यह भाव सज्जनों में सदैव विद्यमान रहता है।

'विक्रमोर्वशीयम्' के चतुर्थ अङ्क में चित्रलेखा और सहजन्या अपनी प्रिय सखी उर्वशी के वियोग में अत्याधिक दुःखी होकर विलाप करती हैं तथा अपनी तुलना हंसिनियों से करती है कि सङ्गिनी प्रेम में पागल रोती हुई दो हसिनियाँ सरोवर में दुःखी हो रही हैं।[5] सहजन्या द्वारा चित्रलेखा से पूछने पर उर्वशी के वियोग में राजा की दशा कैसी है ? इस पर चित्रलेखा अत्याधिक व्यथित हो जाती है और कहती है कि उसी वन में प्रिया की खोज में दिनरात बिता रहा है। यह मेघ समय आ रहा है, इसमें तो सुखी जन भी उत्कण्ठित हो उठते हैं, राजा पर तो विपत्ति आ जायेगी।[6] इस प्रकार चित्रलेखा और सहजन्या दोनों अपनी सखी के वियोग में अत्याधिक दुःखी दिखलाई देती हैं। चित्रलेखा व सहजन्या दोनों राजा की दशा के बारे में दुःखी हैं।

अभिज्ञानशाकुन्तल का सम्पूर्ण चतुर्थ अङ्क स्नेह, सद्भावना, आत्मीयता एवं करुणा की अभिव्यक्ति है। शकुन्तला पतिगृह को भेजी जा रही है क्योंकि अब वह दूसरे की हो गई है। उस पर चारों ओर से मंगल सूचक आशीर्वादों की वर्षा हो रही है। उसमें केवल आश्रमवासी जनों की उदारता, सहृदयता पर ही आलोक नहीं डाला गया अपितु शकुन्तला के सरल, निस्पृह एवं निष्कपट आचरण की परोक्ष स्वीकृति भी उसमें विद्यमान है। तपस्विनियों के इस आशीर्वाद में कितनी सच्चाई, कितनी तन्मयता, कितना आनन्द व विह्वलता भरी हुई है। शकुन्तला का हृदय मनुष्यों से ही नहीं, आश्रमस्थ पादपों और पशुपक्षियों से भी प्रेम सूत्र में निबद्ध है। यद्यपि शकुन्तला आर्यपुत्र के दर्शन के लिए उत्सुक है तथापि वह आश्रम को छोड़ते समय दुःख का अनुभव करती हुई कहती है कि सखी प्रियंवदा ! आर्यपुत्र के दर्शनों के लिए उत्सुक होते हुए भी आश्रम को छोड़ते हुए मेरे पैर अत्यन्त दुःख के साथ आगे पड़ रहे हैं।[7]

सम्पूर्ण चतुर्थ अङ्क में स्नेह, सद्भावना और सौहार्द की जो पवित्र मन्दाकिनी प्रवाहित हुई। उसमें हमारी संस्कृति के सनातन सन्देश की ध्वनित सुनाई देती है।

eerk

स्त्रियों में पाये जाने वाला स्वाभाविक व सहज गुण ममता है। जिसका कालिदास ने यथा स्थान उत्कृष्ट वर्णन किया है। इस मनोभाव के बिना नारी पात्रों की मनोदशा का वर्णन अधूरा प्रतीत होता है।

'मेघदूत' गीतिकाव्य में यक्षपत्नी को मन्दार वृक्ष से अत्यधिक स्नेह है। यक्षपत्नी ने मन्दार वृक्ष को पुत्रवत् पाला है अब मन्दार वृक्ष बालमन्दार न रहकर कुसुमाकर बन गया है।[8] यक्ष पत्नी का मन्दार वृक्ष के प्रति पुत्र जैसा स्नेह उसकी ममता को प्रदर्शित करता है।

अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अंक में शकुन्तला का न केवल पेड़–पौधों से भाई के तुल्य प्रेम है, अपितु अपने हाथों से पाल पोसकर बड़े किये गए मृग को पुत्रवत स्नेह करती है। विदाई के समय वह मृग को कहती है कि पुत्र ! मुझ साथ छोड़कर जाने वाली का पीछा क्यों कर रहे हो ? जन्म देकर शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हुई अपनी माता के बिना भी तुम बड़े किये गये हो। अब भी पिताजी मुझसे रहित तुम्हारी चिन्ता करेगें। तो पुत्र, लौट जाओ। लौट जाओ (रोती हुई चल पड़ती है)।[9]

यह कथन शकुन्तला के अपने हाथों से बड़े किये गए मृग के प्रति ममता का परिचायक है।

पाँचवे अङ्क में राजा द्वारा अस्वीकार की गई शकुन्तला को राजमहल में छोड़कर सभी तपस्वी जन व गौतमी तपोवन में लौटने का निर्णय करते हैं किन्तु गौतमी माँ के समान शकुन्तला के लिए चिन्तित है कि अब पति द्वारा त्यागी गई उसकी पुत्री का क्या होगा ? गौतमी (रुककर) वत्स शाङ्गरव ! यह शकुन्तला तो करुण स्वर से रोती हुई हमारे पीछे–पीछे आ रही है। पति के कठोरता पूर्वक प्रत्याख्यान कर देने पर बेचारी मेरी पुत्री क्या करे ?[10]

इस प्रकार गौतमी का शकुन्तला के प्रति अत्याधिक स्नेह परिलक्षित होता है।

'विक्रमोर्वशीयम्' के प्रथम अङ्क में मेनका अपनी सखि उर्वशी और महाराज पुरुरवा को सकुशल देखकर शान्ति का अनुभव करती है।

मेनका (देखकर) दोनों हमारी प्रिय सखियाँ मिल गई हैं। यह प्रिय सखी लौट आई है और घाव रहित शरीर वाले राजर्षि दिखलायी देते हैं।[11]

द्वितीय अङ्क में उर्वशी व चित्रलेखा प्रमदवन में छिपकर विदूषक व राजा की बात सुनती हैं। उर्वशी स्वयं राजा से मिलने को आतुर है तथापि उर्वशी भयभीत भी है कहीं राजा की मनस्थिति उसके हृदय के अनुकूल न हो। लेकिन विदूषक द्वारा अपना नाम सुनकर वह शान्ति का अनुभव करती है। उर्वशी कहती है कि कमजोर हृदय ! अब तो धीरज धर।[12]

पाँचवे अङ्क में राजा के साथ आसन पर बैठे कुमार आयु को देखकर उर्वशी के मन में विभिन्न प्रकार के विचारों का द्वन्द्व चलता रहता है किंतु तापसी सत्यवती को देखकर उसे अपने पुत्र का स्मरण हो जाता है और उर्वशी शान्ति का अनुभव करती है। इससे उर्वशी की ममता परिलक्षित होती है। इस प्रकार कालिदास ने नारी मनोभावों का विस्तृत वर्णन किया है।

REFERENCE

यन्मयाशोकदोहद नियोगे मालविकायै प्रतिज्ञात तदस्या अभिजनं च निवेद्य मम वचनेनेरावती – मनुनय। त्वयाहं यान्न परिभ्रंशयितव्येति। – मालविका० पञ्चम अंक पृ० 145 देवी (मालविकां हस्ते गृहीत्वा) इदमार्यपुत्रः प्रियनिवेदनानुरूपं पारितोषिकं प्रतीच्छतु। – मालविका० पञ्चम अंक पृ० 146 हला शकुन्तले। गच्छ त्वम् उटजात्फलमिश्रअर्घ्यमुपाहर इदमपि पादोदकं भविष्यति। – अभिज्ञान० [illegible] पृ० 57 तेन अस्यां तावत्प्रच्छायशीतलायां सप्तवर्णवेदिकायामुपविश्वयार्यः परिश्रममपनयतु। वही० सहचरी दुःखालीढं सरोवरे स्निग्धम्। वाष्पावल्गितनयनं ताम्यति हंसी युगलम्। – विक्रमो० चतुर्थअङ्क श्लोक 2 तस्मिन्नेव प्रियतमां विचिन्वन्नहोरात्रानतिवाहयति एतेन पुनर्निर्वृतानामप्युत्कण्ठाकारिणा मेघोदयेनानानर्थाधिनो भविष्यति। विक्रमो० चतुर्थ अङ्क पृ० 140 शकुन्तला हला प्रियवंदा। आर्यपुत्रदर्शनोत्सुकाया अप्याश्रमपदं परित्यजन्त्या दुःखदुःखेन मे चरणौ पुरतः प्रवर्तेते। – अभिज्ञान० चतुर्थअङ् पृ० 136 तत्रागारं धनपतिगृहादुत्तरेणा स्मदीयं, दूराल्लक्ष्यं सुरपति धनुश्चारुणा तोरणेन। यस्योपान्ते कृतकतनयः कान्तया वर्धितो मे, हस्तप्राप्य स्तबकनमितो बालमन्दारवृक्षः। मेघदूत उत्तरमेघ श्लोक 15 शकुन्तला (दृष्ट्वा) रूदती प्रस्थिता वत्स। किं मां सहवास परित्यागिनीमन्वेष्यसि। अचिरप्रसूतोपरतया जनन्या सा वर्धित एवं इदानीमपि मया विरहितं त्वां तातश्चिन्तयिष्यति। तन्निवर्तस्व वत्स। निवर्तस्व। – अभिज्ञान० चतुर्थअङ्क पृ० 139 वत्स शाङ्र्गरव। अनुगच्छत्येषा करुणपरिदेविनी शकुन्तला। प्रत्यादेशपरुषे भर्तरि किं वा पुत्रिका मे करोतु। अभिज्ञान० पञ्चम अंक पृ० 176 (निर्वर्ण्य) द्वे अपि नः प्रिये उपनते। इयं प्रत्यानीता प्रिय सखी अयं चापरिक्षतशरीरो राजर्षि। – विक्रमो० प्रथम अङ्क पृ० 22 उर्वशी (सहर्षम्) हीनसत्त्व हृदय ! समाश्वसिहि। – वही० द्वितीय अङ्क पृ० 62